जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 19 संख्याः 210 प्रभात जालोर, बुधवार 6 नवम्बर, 2024 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

23 नवम्बर को वायनाड की संसदीय सीट के चुनाव बाद नये संतुलन बनेंगे लोकसभा में?

जैसी की उम्मीद है, प्रियंका गांधी जीतेंगी तथा कांग्रेस में दो टीम उभरेंगी लोकसभा में, राहुल गांधी की टीम व प्रियंका गांधी की टीम

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

- राहुल व प्रियंका की राजनीतिक स्टाइल में काफी अन्तर है। राहुल गांधी ज्यादा समय सदन में गुजारने में विश्वास नहीं रखते, और हर समय प्रतिद्वंदी पार्टी से हर मौके पर पंजा लड़ाने में रुचि नहीं रखते।
- पर प्रियंका गांधी "हैण्ड्स ऑन" राजनीतिज्ञ हैं, तथा सदन में सत्ता पक्ष से भिड़ने का कोई मौका गंवाना नहीं चाहतीं, और चाहेंगी कि उनकी महिला ब्रिगेड व समर्थकों की जमात उनके बगल में खड़ी रहे, सत्तापक्ष से लोहा लेने के लिए। अतः शीघ्र ही प्रियंका गांधी अपना एक और नया "पावर सेन्टर" खड़ा कर लेंगी।
- इसी प्रकार प्रियंका गांधी संगठन में भी सक्रिय होंगी, तथा अपने टीम के लोगों को और पद दिलाना चाहेंगी, अतः देखना यह है कि प्रियंका कितनी बड़ी व शक्तिशाली टीम बना पाती हैं।
- यह देखना काफी रोचक रहेगा कि कांग्रेस का कौन सा नेता किस टीम से जुड़ने का प्रयास कर रहा है।

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। ऐसी आशा की जा रही है कि अगर 23 नवम्बर को प्रियंका गांधी वायनाड से लोकसभा के लिए निर्वाचित हो जाती हैं तो कांग्रेस पार्टी के अन्दर तथा संसद में सत्ता के संतुलन में एक बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

संसद का शीतकालीन सत्र 25 नवम्बर को शुरू होगा तथा इस सत्र के दौरान, लोकसभा और राज्यसभा में गांधी परिवार के तीन सदस्य पहली बार दिखाई देंगे।

जहां पार्टी के दो ताकतवर नेता सोनिया गांधी तथा मल्लिकार्जुन खड़गे राज्यसभा में होंगे, वहीं सबकी निगाहें लोकसभा पर लगी होंगी, जहां राहुल गांधी एवं प्रियंका गांधी मौजूद होंगे।

लोकसभा में ही सत्ता की असली राजनीति दिखाई देगी।

प्रियंका ने अपने लिए किस प्रकार की भूमिका सोच रखी है इस बारे में काफी अटकलें चल रही हैं।

राहुल गांधी हर मौके पर नज़र आने वाले राजनेता नहीं हैं तथा वे सदन में बहुत ज्यादा समय गुजारने में विश्वास नहीं रखते।

ऐसी आशा की जा रही है कि प्रियंका लोकसभा में हमेशा नज़र आने वाली नेता के रूप में अपनी पूरी "फार्म" में रहेंगी तथा पार्टी के बहुत सारे सांसद, जिनमें पार्टी की महिला ब्रिगेड भी शामिल है, हर वक्त उनके साथ खड़े दिखाई देंगे।

राहुल गांधी की टीम को यह भी आशंका है कि चुनावी राजनीति में प्रियंका गांधी के प्रवेश से पार्टी में सत्ता का एक नया ढ़ांचा अस्तित्व में आयेगा। यही कारण है कि राहुल गांधी, प्रियंका के चुनावी राजनीति में आगमन बहुत ज्यादा उत्कंठित नहीं थे।

राहुल गांधी के दायें हाथ माने जाने वाले के. सी. वेणुगोपाल वायनाड में पूरा समय दे रहे हैं क्योंकि वे प्रियंका गांधी के साथ "वर्किंग रिलेशनशिप" बनाना चाहते हैं। दरअसल, ऐसा माना जा रहा है कि नियुक्तियों, पदोन्नतियों तथा पद से हटाने में अब प्रियंका गांधी की ज्यादा चलेगी।

सभी लोगों की नज़रें इन भाई-बहिन पर हैं कि इनमें से कौन किस दिशा में जाता है तथा प्रियंका गांधी अपने सहयोग के लिए कितने ज्यादा सक्षम एवं समर्पित लोग तैयार कर सकती हैं।

अब ऐसी आशा की जा रही है कि अब प्रियंका संगठन में स्वयं को ज्यादा मजबूत एवं प्रबल बनायेंगी तथा अपने कुछ विश्वस्त लोगों को संगठन में

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'यूपी मदरसा एक्ट संवैधानिक रूप से वैध है'

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। सर्वोच्च न्यायालय ने मंगलवार को "यू.पी.

- सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट का आदेश रद्द किया, जिसमें यूपी मदरसा एक्ट को असंवैधानिक बताया गया था।

मदरसा एजूकेशन एक्ट, 2004" के संवैधानिक वैधता का समर्थन करते

(शेष पृष्ठ 5 पर)

"जे.एम.एम." यानि "जमकर मलाई मारो"

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 नवंबर। मंगलवार

- केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने झारखंड की एक चुनावी सभा में झारखंड मुक्ति मोर्चा पर भारी भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए टिप्पणी की।

को झारखण्ड के हटिया और लोकर

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के बाद भारी हिंसा होगी ?

आशंका इसलिए है, क्योंकि, मतदान सर्वेक्षकों का मानना है कि, दोनों उम्मीदवारों में से कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं जीत पाएगा

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- सोलहवीं शताब्दी के भविष्य वक्ता नॉस्ट्रडेमस के, चैट जी.पी.टी. द्वारा तैयार ए.आई. संस्करण की भविष्यवाणी भी यह ही जता रही है कि, ट्रम्प व हैरिस दोनों राष्ट्रपति का चुनाव नहीं जीत पायेंगे।
- इसका मतलब यह लगाया जा रहा है कि न तो ट्रम्प और न ही हैरिस साफ-सुथरी स्पष्ट जीत हासिल कर पायेंगे।
- अगर ऐसा हुआ तो हाउस ऑफ रिप्रज़ैन्टेटिव ही बहुमत से निर्णय लेगा कि किसे राष्ट्रपति बनाया जाये।
- इस अनिश्चितता की स्थिति में ए.आई. का मानना है कि तनाव बढ़ेगा, तथा हिंसा फैलेगी।
- हिंसा की आशंका के कारण, पोलिंग स्टेशन्स पर सुरक्षा सुदृढ़ की गई है।
- सर्वे के अनुसार केवल 29 प्रतिशत अमेरिकी मानते हैं कि, ट्रम्प अपनी हार आसानी से, शांति से स्वीकार कर लेंगे।
- मजे की बात यह भी है कि, 20 प्रतिशत अमेरिकी मन से हिंसा का समर्थन करते हैं, उनका मानना है कि हिंसा आवश्यक है देश के हालात सही करने के लिए, देश को सही दिशा में ले जाने के लिए।

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। अमेरिका में अनियमितता के माहौल और इन खबरों के बीच मतदान हुआ है कि चुनाव नतीजे आने के बाद राजनैतिक असंतोष व हिंसा हो सकती है। देश भर के मतदान केन्द्रों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है खास तौर से उन स्टेट्स में जहां मुकाबला बेहद कड़ा है। राजनैतिक विशेषज्ञों का अनुमान है कि 6 जनवरी 2020 को ट्रम्प के हारने के बाद कैपिटल हिल के जो हिंसा व तोड़फोड़ हुई थी वही स्थिति फिर से पैदा हो सकती है।

चैट जी पीटी द्वारा सृजित नॉस्ट्रडैमस के ए.आई. संस्करण ने भविष्यवाणी की है कि दोनों में से कोई भी प्रत्याशी पूरी तरह से नहीं जीतेगा। इसने चुनाव नतीजे के बाद अराजकता पैदा होने की बात कही है। नॉस्ट्रडैमस 16वीं सदी के फ्रैंच भविष्यवक्ता भौतिक शास्त्री तथा संत थे उनके लेखन में भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणियां निहित हैं, जिनमें युद्ध, प्राकृतिक आपदाएं और राजनैतिक हस्तियों का उदय प्रमुख हैं।

ए.आई. की भविष्यवाणी के अनुसार "अंतिम क्षणों के एक ट्विस्ट हो सकता है और कोई भी कुर्सी पर दावा करने की स्थिति में नहीं होगा।" इसका अर्थ है ट्रम्प और हैरिस दोनों में से किसी को भी स्पष्ट जीत नहीं मिलेगी। अगर ऐसा हुआ तो अमेरिकन संविधान के बारहवे संशोधन के अनुसार हाउस ऑफ रिप्रैजेंटेटिव्स प्रतिनिधि सभा, विजेता का निर्णय करेगा। ऐसी स्थिति में एक प्रत्याशी को जीतने के लिए सदन का बहुमत

(शेष पृष्ठ 5 पर)